४. अध्याय चतुर्थ : प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

४.१. प्रस्तावना

४.२. गुजराती भाषा और हिंदी भाषा में समानताएँ और असमानताएँ

४.३. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण से संबंधित त्रुटियाँ, निष्कर्ष, कारण और उनका समाधान

४.४. गुजराती भाषी छात्रों के हिन्दी प्रयोग (व्याकरणिक पक्ष) से संबंधित त्रुटियाँ, निष्कर्ष, कारण और उनका समाधान

४.५. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी वर्तनीगत त्रुटियाँ, निष्कर्ष, कारण और उनका समाधान

4.1. प्रस्तावना :

लधुशोध कार्य के प्रारंभिक चरणों को पूर्ण करने के पश्चात प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या इस अध्याय में किया गया है। प्राप्त प्रदत्तों शोध प्रश्नों की व्याख्या, विश्लेषण एवं निष्कर्ष निकालने में सहायक होती है।

प्रस्तुत अध्याय में प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण उचित विधि से करने का प्रयास किया गया है। शोध अध्ययन हेतु तीन शोध प्रश्नों– एक, गुजराती भाषी कक्षा 8 के छात्रों को हिंदी भाषा सीखने की कौन–कौन सी समस्याएँ हैं? दो, उन समस्यों का कौन–कौन सा कारण हैं? तथा उन समस्याओं का समाधान क्या –हो सकता– हैं? रखा गया हैं; जिनका सही उत्तर ढूंढते हुए एक निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास है।

4.2. गुजराती भाषा और हिंदी भाषा में समानताएँ और असमानताएँ :

'गुजराती भाषा–भाषी छात्रों की हिंदी सीखने समस्याएँ और उनका समाधान' विषय पर अध्ययन करते समय इन दोनों भाषाओं की समानताएँ और असमानताएँ जानना अंत्यत आवश्यक है। चूँकि दोनों भाषाएँ भारोपीय परिवार के अंतर्गत भारतीय आर्य भाषा परिवार की सदस्या है। भारतीय–आर्य उपशाखा में संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रश, हिंदी, उर्दू, पंजाबी, हरियाणवी, डोगरी, गुजराती, मराठी, कोंकणी, बंगाली, आसामी, उड़िया, नेपाली, सिंहली, जिप्सी आदि भाषाओं का समावेश होता है।

हिंदी और गुजराती भाषा के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संदर्भ काफी समान होने के कारण प्रत्येक स्तर पर समानता होना स्वाभाविक है। भाषा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विवेचन करने पर दोनों भाषा में कई स्तरों पर समसनताएं होती है। अतः दोनों भाषा का तुलनात्मक विवेचन इसी दृष्टिकोण से करने का प्रयास किया गया है।

4.2.1. ध्वनि व्यवस्था :

ध्वनि व्यवस्था पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि दोनों भाषा में स्वर ध्वनियाँ समान है तथा व्यंजन ध्वनियाँ (हिंदी की विकसित ध्वनियाँ : ड़, ढ़ तथा अरबी–फारसी से आगत ध्वनियाँ : क़, ख़, ग़, ज़, फ़) को छोड़कर समान हैं।

4.2.2. लिपि व्यवस्था :

हिंदी की लिपि देवनागरी है और गुजराती भाषा की लिपि नागरी है। देवनागरी लिपि को सिरोरेखा लगाना लाज़मी है; जबकी नागरी लिपि में सिरोरेखा नहीं लगायी जाती। ये लिपि में अंतर होने के कारण गुजराती और हिंदी दोनों भाषा की वर्णमाला और अंक की लिखावट में पर्याप्त असमानता हैं। जैसे –

1. मानक वर्णमाला :

- हिंदी स्वर वर्ण :

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ.

- गुजराती स्वर वर्ण :

અ, આ, ઇ, ઈ, ઉ, ઊ, એ, ઐ, ઓ, ઔ, ઑ

- हिंदी व्यंजन वार्ण :

क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, ळ,

संयुक्त व्यंजन वर्ण : क्ष (क्+ष), ज्ञ (ग्+ञ), त्र (त्+र), द्य (द्+य), श्र(श्+र), ऋ (र्+इ), अं (अ+न्), अः ('अ' का विसर्गयुक्त रूप).

- गुजराती व्यंजन वर्ण :

ક, ખ, ગ, ઘ, ઙ, ચ, છ, જ, ઝ, ઞ, ટ, ઠ, ડ, ઢ, ણ, ત, થ, દ, ધ, ન, પ, ફ, બ, ભ, મ, ય, ર, લ, વ, શ, ષ, સ, હ, ળ, ક્ષ, જ્ઞ, ત્ર, દ્ય, શ્ર, ઋ, અં, અઃ

2. मानक अंक :

- हिंदी अंक :

१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ०.

- गुजराती अंक :

૧ ૨ ૩ ૪ ૫ ૬ ૭ ૮ ૯ ૦

- भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

4.2.3. रूप–रचना :

नामिक–रूप–रचना के अंतर्गत लिंग, वचन, कारक, काल, पुरूष आदि का समावेश होता हैं। गुजराती और हिंदी भाषा में रूप–रचनागत समानता–असमानता निम्न प्रकार है :

1. लिंग व्यवस्था :
   हिंदी में दो लिंग– पुल्लिंग और स्त्रीलिंग है, किंतु गुजराती भाषा में तीन लिंग– पुल्लिग, स्त्रीलिंग तथा उभयलिंग की व्यवस्था है। यह व्यवस्था प्राकृतिक है। संज्ञा तथा क्रिया रूपों पर इनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। हिंदी में लिंग क्रिया के लिए व्याकरणिक कोटी है। शब्द– रचना के स्तर पर लिंग प्रत्यय, संज्ञा तथा विशेषण के रूपों को प्रभावित करते है।
2. वचन व्यवस्था :
   गुजराती भाषा में हिंदी की भाँति दो वचन हैं– एकवचन और बहुवचन।
3. कारक व्यवस्था :
   गुजराती भाषा में हिंदी की भाँति ही सभी कारको का प्रयोग होता है।
4. पुरूष :
   गुजराती भाषा में हिंदी की भाँति तीनों पुरूष– उत्तम, मध्य तथा अन्य पुरूष– के एक वचन और बहुवचन में भिन्न–भिन्न रुप हैं।
5. काल :
   गुजराती भाषा में हिंदी की भाँति विभिन्न कालों की व्यवस्था समान है।
6. वाच्य :
   गुजराती भाषा में हिंदी की भाँति ही कर्तृवाचक, कर्मवाचक तथा भाव वाचक का प्रयोग होता है।

4.2.4. शब्द रचना :

हिंदी और गुजराती दोनों भाषा एक ही परिवार की भाषा है और दोनों भाषाओं का विकास संस्कृत>पाली>प्राकृत>अपभ्रंश की परंपरा में हुआ है। इतना ही नहीं दोनों भाषा का भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्णरूपेण एक ही परिवेश में विकास हुआ है तथा दोनों भाषा की शब्द निर्माण प्रक्रिया भी समान है। अतः दोनों भाषा में अनगिनत शब्द समान हैं।

4.2.5. वाक्य रचना :

गुजराती भाषा में हिंदी की भाँति सरल वाक्य, मिश्र वाक्य तथा संयुक्त वाक्य की रचनाएँ होती है। आधार भूत वाक्य साँचों में पदक्रम, पदबंद–संरचना की दृष्टि से भी समानता है।

४.३. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण से संबंधित त्रुटियाँ, निष्कर्ष, कारण और उनका समाधान

४.३.१. प्रस्तावना

४.३.२. हिंदी भाषा की ध्वनियाँ का परिचय
४.३.२.१. स्वर ध्वनियाँ
४.३.२.२. व्यंजन ध्वनियाँ

४.३.३. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी उच्चारण से संबंधित त्रुटियाँ
४.३.३.१. स्वर ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ
४.३.३.२. व्यंजन ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ
४.३.३.३. अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

४.३.४. उच्चारणिक त्रुटियों का निष्कर्ष, कारण तथा समाधान के सुझाव

4.3.1. प्रस्तावना :

भाषा का मूलस्वरूप उच्चरित है। अतः सार्थकता तथा प्रभाविता की दृष्टि से उच्चारण की शुद्धता अपेक्षित हैं। उच्चारण की शुद्धता से तात्पर्य है – भाषा विशेष की ध्वनि व्यवस्था का सही प्रयोग करना।

गुजराती भाषी छात्र अन्य भाषा हिन्दी की ध्वनि–व्याकरण से पूर्णतः परिचित नहीं होते, अतः उसके उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। गुजराती भाषी छात्रों द्वारा की गई उच्चारणगत त्रुटियों की विवेचना करने से पहले हिंदी भाषा की ध्वनियाँ का परिचय दिया गया है और इसके पश्चात प्राप्त त्रुटियों का विवेचन, निष्कर्ष, कारण तथा समाधान प्रस्तुत किए गए हैं।

4.3.2. हिंदी भाषा की ध्वनियाँ का परिचय :

4.3.2.1. स्वर ध्वनियाँ :

स्वर ध्वनियाँ वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुखविवर से निकल आती है अर्थात् स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वयं उच्चरित होती हैं। हिंदी की स्वर ध्वनियाँ इस प्रकार हैं :

मूल स्वर : अ, इ, उ – 3

दीर्घ स्वर : आ, ई, ऊ – 3

संयुक्त स्वर : अ + इ = ए
अ + इ = ओ
अ + इ = ऐ
अ + इ = औ
– 4

अंग्रजी से आगत स्वर : ऑ – 1

कुल = 11 स्वर ध्वनियाँ

टिप्पणी : परंपरागत व्याकरणों में स्वरों के अंतर्गत ऋ, अं, अः –इन तीन ध्वनियों को रखा गया है जो व्याकरणिक एवं भाषागत विश्लेषण की दृष्टि से ठीक नहीं। ऋ

= र + इ, अं = अ + न् तथा अः = अ का विसर्गयुक्त रूप है। अतः स्वर एवं व्यंजन के मिश्रित या संयुक्त रूप हैं, स्वर ध्वनियाँ कदापि नहीं हैं। छात्रों को संरचना की दृष्टि से इनका विश्लेषणयुक्त ज्ञान देना आवश्यक है। ऋ, अं, एवं अः की मात्राएँ हैं – क्रमशः (ृ), (ं) एवं (ः) हैं।

स्वर ध्वनियों की मात्राएँ :

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	ऑ
	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ॅ

टिप्पणी : अ की कोई मात्रा नहीं है। यह सर्वत्र स्वयं आता है। अन्य स्वर स्वतंत्र रूप से स्वयं आते हैं तथा प्रतिनिधि के रूप में उनकी मात्रा आती हैं।

'ऑ' स्वर ध्वनि अंग्रजी से आगत ध्वनि है। अंग्रेजी से आगत शब्दों के साथ यह ध्वनि हिंदी में आई है। हिंदी में इसके न्युनतम विरोधी युग्म उपलब्ध है :

हाल (हालचाल), हॉल (बड़ा कमरा), बाल (सिर के), बॉल (गेंद), बोल (बोलना), आदि।

4.3.2.2. व्यंजन ध्वनियाँ :

व्यंजन ध्वनियाँ वे ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में हवा मुख विवर से अबाध गति से नहीं निकलती। वायुमार्ग में कोई न कोई पूर्ण या अपूर्ण अवरोध अवश्य उपस्थित होता है। अर्थात् व्यंजन ध्वनियाँ वे ध्वनियाँ हैं जो स्वर की सहायता से उच्चरित होती हैं। हिंदी की व्यंजन ध्वनियाँ इस प्रकार हैं :

क वर्ग	:	क,	ख,	ग,	घ,	ङ	– 5
च वर्ग	:	च,	छ,	ज,	झ,	ञ	– 5
ट वर्ग	:	ट,	ठ,	ड,	ढ,	ण	– 5
त वर्ग	:	त,	थ,	द,	ध,	न	– 5
प वर्ग	:	प,	फ,	ब,	भ,	म	– 5
अंतस्थ	:	य,	व				– 2
लुण्ठित	:	र					– 1
पार्श्विक	:	ल					– 1
ऊष्म	:	श,	ष,	स,	ह		– 4

संयुक्त ध्वनियाँ	: क्ष = क् + ष	– 1
	त्र = त् + र	– 1
	ज्ञ = ग् + ञ	– 1
हिंदी की विकसित ध्वनियाँ : ड़, ढ़		– 2
अरबी–फारसी से आगत ध्वनियाँ : क़, ख़, ग़, ज़, फ़		– 5
		कुल = 43

ऋ, अं, अः को इनमें जोड़ दें तो	3
हिंदी की व्यहृत व्यंजन ध्वनियाँ होगी	46

चंद्र बिंदु – (ँ) :

यदि 'न' की उच्चारण की दृष्टि से 1 मात्रा है तो 'न्' की आधी (½) मात्रा है। उच्चारण की दृष्टि से 'न' की चौथाई मात्रा (¼) चंद्रबिंदु (ँ) है; यथा : हंस – हँस, सास–साँस, गोद–गोंद, आदि।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़ – ये पाँच आगत व्यंजन ध्वनियाँ हैं। ये पाँचों व्यंजन ध्वनियाँ अरबी–फ़ारसी से ग्रहण की गई हैं। बाद में ज़, फ़ व्यंजन ध्वनियाँ अंग्रजी से भी ग्रहण की गई हैं। अरबी–फ़ारसी एवं अंग्रजी से शब्द ग्रहण करने कारण इनके न्यूनतम विरोधी युग्म उपलब्ध हैं :

क : ताक (देख)
क़ : ताक़ (दीवाल का आला)
ख : खाना (भोजन)
ख़ा : ख़ाना (मेज या अलमारी का)
ग : बाग (बग़ीचा–फलों, आदि का)
ग़ : बाग़ (घोड़े की)
ज : राज (राजा, राजपुत्र, राजकाज)
ज़ : राज़ (रहस्य)
फ : फन (साँप का)
फ़ : फ़न (हुनर)

ड़, ढ़, पाली > प्राकृत > अपभ्रंश काल में तद्भवीकरण की प्रक्रिया में विकसित ध्वनियाँ हैं; यथा :

उड्डयन > उड़ना; पठ् > पढ़।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हिंदी की वर्ण व्यवस्था निम्नानुसार है :

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	ऑ
	ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ	ॅ

क, ख, ग, घ, ङ, क़, ख़, ग़
च, छ, ज, झ, ञ, ज़
ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म, फ़
य, र, ल, व
श, ष, स, ह
क्ष, त्र, ज्ञ, द्य, श्र
अं, अः, ऋ, ँ

टिप्पणी : द्य (द्+य) एवं श्र (श्+र) का ज्ञान भी छात्र को देना आवश्यक है। अतः इन्हें भी वर्णमाला में शामिल किया गया है।

4.3.3. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी उच्चारण से संबंधित त्रुटियाँ :

उच्चारणगत त्रुटियों में स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों से संबंधित त्रुटियों तथा अनुनासिकता से संबंधित त्रुटियों की चर्चा की गयी हैं।

4.3.3.1. स्वर ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र स्वर ध्वनियों के उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियां करते हैं। इन त्रुटियों में कुछ विशिष्ट प्रवृतियां दृष्टिगत होती हैं। स्वर संबंधी त्रुटियों का वर्गीकरण इसी आधार पर किया गया है :

1. दीर्घीकरण :

अन्य भाषा के रुप में हिंदी सीखते समय गुजराती भाषी छात्र स्वरों के उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटीया करते हैं। उच्चारण–परीक्षण के लिए प्रयुक्त सामग्री के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि छात्रों के हिंदी स्वरों के उच्चारण में

दीर्घीकरण की प्रवृति स्पष्ट होती हैं – वे 'इ' के स्थान पर 'ई' तथा 'उ' के स्थान पर 'ऊ' का उच्चारण करते हैं; जैसे –

- अ > आ –
- इ > ई इनाम > ईनाम,
- उ > ऊ बहुत > बहूत।

2. ह्रस्वीकरण :

गुजराती भाषी छात्र हिंदी के दीर्घ स्वरों का ह्रस्व उच्चारण भी करते पाये गये हैं। ये छात्र 'आ' , 'ई' , 'ऊ' के स्थान पर क्रमशः 'अ', 'इ' तथा 'उ' का उच्चारण करते हैं।

'आ' के स्थान पर 'अ' का उच्चारण केवल शब्द के आदि और मध्य की स्थिति में होता है। 'ई' तथा 'ऊ' के स्थान पर 'इ' , 'उ' का उच्चारण शब्द के आदि, मध्य और अंत तीनों ही स्थितियों में होता है, सारणी से यह बात स्पष्ट हो जाती है। जैसे –

- आ > अ – हमारा > हमरा,
- ई > इ – तीन > तिन,
- ऊ > उ – खजूर > खजुर।

3. संयुक्त स्वर ध्वनियाँ :

हिंदी भाषा के चार संयुक्त स्वर है। गुजराती भाषी छात्र हिंदी के संयुक्त स्वरों के उच्चारण में त्रुटियाँ करते पाये गये हैं। ये छात्र 'ए' के स्थान पर 'ओ', 'ए' के स्थान पर 'इ', 'ऐ' के स्थान पर 'इ', 'ऐ' के स्थान पर 'ए', 'औ' के स्थान पर 'ओ', 'ए' के स्थान पर 'ई' तथा 'ऑ' के स्थान पर 'ओ' का उच्चारण करते पाये गये हैं। जैसे –

- ए > ओ – सबेरे > सबोरे
- ए > इ – बेचता > बिचता
- ऐ > इ – ऐसा > इसा
- ऐ > ए – पैदल > पेदल
- औ > ओ – औरत > ओरत
- ए > ई – स्टेशन > ईस्टेशन
- ऑ > ओ – डॉक्टर >डोक्टर

सारिणी–1 : 4.3.3.1. स्वर ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	दीर्घीकरण	अ > आ – अमर > आमर	0
		इ > ई – इनाम > ईनाम	51
		उ > ऊ – बहुत > बहूत	17
2	ह्रस्वीकरण	आ > अ – हमारा > हमरा	05
		ई > इ – तीन > तिन	27
		ऊ > उ – खजूर > खजुर	45
3	संयुक्त स्वर ध्वनियाँ	ए > ओ – सबेरे > सबोरे	09
		ए > इ – बेचता > बिचता	13
		ऐ > इ – ऐसा > इसा	11
		ऐ > ए – पैदल > पेदल	30
		औ > ओ – औरत > ओरत	24
		ए > ई – स्टेशन > ईस्टेशन	26
		ऑ > ओ – डॉक्टर >डोक्टर	03
योग			20

4.3.3.2. व्यंजन ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

परीक्षण के आधार पर गुजराती भाषी छात्र व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में भी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं; त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण निम्नलिखित क्रम से किया गया है :

1. अल्पप्राण–महाप्राण :
   गजराती भाषी छात्र हिंदी की महाप्राण ध्वनियों के स्थान पर अल्पप्राण ध्वनियों का उच्चारण करते हैं। वे ख, घ, झ, ध, फ और छ के स्थान पर क्रमशः क, ग, ज, द, प और च का उच्चारण करते पाये गए। निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

   ख>क – मुखड़ा > मुकरा,

घ>ग – घर > गर,

झ>ज – झरना > जरना, समझ > समज,

ध>द – धरा > दरा, धनी > दनी,

फ>प – कफन > कपन,

भ>ब – आभार > आबार,

छ>च – कुछ > कुच

उपर्युक्त त्रुटियों में महाप्राण ध्वनियों के स्थान पर अल्पप्राण ध्वनियों के उच्चारण की प्रवृति स्पष्ट होती हैं किन्तु ठीक इसके विपरीत त्रुटियाँ भी मिलती हैं; यथा – त>थ – भूतल > भूथल

इस प्रकार की त्रुटियों में अल्पप्राण ध्वनियों के स्थान पर महाप्राण ध्वनियों के उच्चारण की प्रवृति स्पष्ट होती है किन्तु इसकी आवृति–गणना पहले प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा बहुत ही कम है।

2. घोष–सघोष :

छात्रों ने सघोष ध्वनियों के स्थान पर अघोष ध्वनियों के उच्चारण की त्रुटियाँ की हैं। अग्र लिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

ग>क – लोग > लोक,

उपर्युक्त उच्चारणगत त्रुटियां में सघोष उच्चारण के स्थान पर अघोष उच्चारण की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है; किंतु ठिक इसके विपरित अघोष उच्चारण के स्थान पर सघोष उच्चारण की प्रवृत्ति नहीं मिलती।

3. मूर्धन्य–दंत्य :

गुजराती भाषी छात्र मूर्धन्य ध्वनियों के स्थान पर दंत्य ध्वनियों का उच्चारण की अनेक प्रकार की त्रुटियां की हैं; यथा–

ट>त – टमाटर > तमातर,

ड>द – डाल > दाल, डकेत > दकेत,

ण>न – गुण > गुन।

4. ऊष्म वर्ण :

छात्रों ने ऊष्म ध्वनियों के उच्चारण में विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ की हैं; यथा–

श>स – आकाश > आकास, शुभ > सुभ, देश > देस,

श>ष – आकाश > आकाष,

ष>स – विष > विस, विषय > विसय,

ष>श – विष > विश,

स>श – सामान > शामान, सफेद > शफेद,

उपर्युक्त त्रुटियों में 'श' के स्थान पर 'स', 'ष' का उच्चारण तथा 'ष' के स्थान पर 'स', 'श' का उच्चारण और 'स' के स्थान पर 'श' का उच्चारण की प्रवृत्ति स्पष्ट होती हैं।

5. अन्य :

गुजराती भाषी छात्र कुछ ध्वनियों के उच्चारण के स्थान पर अन्य ध्वनियों का उच्च्चारण की त्रुटियाँ की हैं; यथा–

छ>श – छत्र > शत्र,

छ>स – कुछ > कुस,

छ>च – कुछ > कुच,

च>स – सच > सस

सारिणी–2 : 4.3.3.2. व्यजंन ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	अल्पप्राण–महाप्राण	ख>क – मुखड़ा > मुकरा	17
		घ>ग – घर > गर	01
		झ>ज – समझ > समज	38
		ध>द – धरा > दरा	05
		फ>प – कफन > कपन	46
		भ>ब – आभार > आबार	03
		छ>च – कुछ > कुच	03
2	महाप्राण–अल्पप्राण	त>थ – भूतल > भूथल	30
3	घोस–सघोस	ग>क – लोग > लोक	05
4	मूर्धन्य–दंत्य	ट>त – टमाटर > तमातर,	05
		ड>द – डकेत > दकेत,	05
		ण>न – गुण > गुन।	15
5	ऊष्म वर्ण	श>स – देश > देस,	15
		श>ष – आकाश > आकाष,	27
		ष>स – विषय > विसय,	03
		ष>श – विष > विश,	27
		स>श – सामान > शामान,	27
6	अन्य	छ>स – कुछ > कुस,	03
		छ>च – कुछ > कुच	04
		च>स – सच > सस	05
योग			14.2

4.3.3.3. अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र हिंदी की अनुनासिकता के उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं। वह अनुनासिकता के स्थान पर निरनुनासिक उच्चारण करते हैं; यथा –

1. अनुनासिक–निरनुनासिक :

ँ > × – हाँ >हा, पहुँच > पहुच, गाँव > गाव, कहाँ > कहा।

उपर्युक्त त्रुटियों में अनुनासिकता का उच्चारण निरनुनासिक रूप में उच्चारण की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

सारिणी–3 : 4.3.3.3. अनुनसासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

क्रम	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	अनुनासिक–निरनुनासिक	ँ > × – हाँ >हा, पहुँच > पहुच, कहाँ > कहा।	16

4.3.4. उच्चारणिक त्रुटियों का निष्कर्ष, कारण तथा समाधान के सुझाव :

परीक्षण के आधार पर प्राप्त उच्चारणगत त्रुटियों के विवेचन के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आए हैं। इन निष्कर्ष के आधार पर त्रुटियाँ होने का कारण तथा समाधान के सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

4.3.4.1. निष्कर्ष :

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी उच्चारणगत कुल त्रुटियाँ 17 प्रतिशत प्राप्त हुई। इन त्रुटियों को तीन भाग में विभाजित कर सकते हैं :

1. स्वर–ध्वनियों से संबंधित त्रुटियाँ,
2. व्यंजन–ध्वनियों से संबंधित त्रुटियाँ और
3. अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ।

1. स्वर–ध्वनियों से संबंधित त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी स्वर–ध्वनियों से संबंधित उच्चारणगत कुल त्रुटियाँ 20 प्रतिशत प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में तीन प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं :

1. दीर्घीकरण की प्रवृत्तियाँ :

छात्रों के हिंदी स्वरों के उच्चारण में दीर्घीकरण की प्रवृति स्पष्ट होती हैं। ये छात्र ह्स्व–स्वर–ध्वनियों के स्थान पर दीर्घ स्वर–ध्वनियों के उच्चारण की त्रुटियाँ करते हैं। इस प्रवृत्ति के अंतर्गत 23 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

2. ह्रस्वीकरण की प्रवृत्तियाँ :

गुजराती भाषी छात्र हिंदी के दीर्घ स्वरों का ह्रस्व उच्चारण भी करते पाये गये हैं। ये छात्र दीर्घ–स्वर–ध्वनियाँ के स्थान पर ह्रस्व स्वर–ध्वनियाँ का उच्चारण की त्रुटियाँ करते हैं। इसकी कुल 26 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

3. संयुक्त स्वर संबंधी प्रवृत्तियाँ :

गुजराती भाषी छात्र हिंदी के संयुक्त स्वरों के उच्चारण में त्रुटियाँ करते पाये गये हैं। ये छात्र संयुक्त स्वर–ध्वनियाँ के उच्चारण अन्य स्वर–ध्वनियाँ के रुप में करते हैं। इस प्रकार की कुल 17 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

2. व्यंजन–ध्वनियों से संबंधित त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी की व्यंजन–ध्वनियों के उच्चारण में कुल त्रुटियाँ 14.2 प्रतिशत प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में छः प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं :

1. अल्पप्राण–महाप्राण की प्रवृत्तियाँ :

छात्रों ने अल्पप्राण व्यंजन ध्वनियाँ के उच्चारण स्थान पर महाप्राण व्यंजन ध्वनियाँ के उच्चारण किया हैं। इस प्रकार की कुल 16 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

2. महाप्राण–अल्पप्राण की प्रवृत्तियाँ :

छात्रों ने महाप्राण व्यंजन ध्वनियाँ के उच्चारण के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन ध्वनियाँ का उच्चारण किया हैं। इस प्रकार की कुल 30 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

3. घोस–सघोस की प्रवृत्तियाँ :

छात्रों ने सघोष व्यंजन ध्वनियाँ के उच्चारण के स्थान पर अघोष ध्वनियाँ का उच्चारण करने की प्रवृत्ति की हैं। इसकी कुल 05 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

4. मूर्धन्य–दंत्य की प्रवृत्तियाँ :

गुजराती भाषी छात्रों ने मूर्धन्य ध्वनियाँ के उच्चारण के स्थान पर दंत्य ध्वनियाँ के उच्चारण के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ की हैं। इसकी कुल 04 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

5. ऊष्म वर्ण से संबंधित प्रवृत्तियाँ :

   छात्रों ने ऊष्म ध्वनियाँ के उच्चारण में विभिन्न प्रकार की त्रुटियां की हैं। इस प्रकार की कुल 20 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

6. अन्य प्रकार की प्रवृत्तियाँ :

   गुजराती भाषी छात्रों ने कुछ व्यंजन ध्वनियाँ के उच्चारण के स्थान पर अन्य व्यंजन ध्वनियाँ का उच्चारण किया हैं; इस प्रकार की त्रुटियों को अन्य प्रकार की प्रवृत्तियाँ में रखा हैं। इस प्रकार की कुल 04 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

3. अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र हिंदी की अनुनासिकता के उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं। वह अनुनासिकता के स्थान पर निरनुनासिक उच्चारण करते हैं। इसकी कुल 16 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

सारिणी–4 : 4.3.4. समग्र उच्चारणगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	दीर्घीकरण	अ > आ – अमर > आमर	0
		इ > ई – इनाम > ईनाम	51
		उ > ऊ – बहुत > बहूत	17
2	ह्रस्वीकरण	आ > अ – हमारा > हमरा	05
		ई > इ – तीन > तिन	27
		ऊ > उ – खजूर > खजुर	45
3	संयुक्त स्वर ध्वनियाँ	ए > ओ – सबेरे > सबोरे	09
		ए > इ – बेचता > बिचता	13
		ऐ > इ – ऐसा > इसा	11
		ऐ > ए – पैदल > पेदल	30
		औ > ओ – औरत > ओरत	24
		ए > ई – स्टेशन > ईस्टेशन	26
		ऑ > ओ – डॉक्टर >डोक्टर	03
4	अल्पप्राण–महाप्राण	ख>क – मुखड़ा > मुकरा	17
		घ>ग – घर > गर	01
		झ>ज – समझ > समज	38
		ध>द – धरा > दरा	05
		फ>प – कफन > कपन	46
		भ>ब – आभार > आबार	03
		छ>च – कुछ > कुच	03
	महाप्राण–अल्पप्राण	त>थ – भूतल > भूथल	30
5	घोस–सघोस	ग>क – लोग > लोक	05
6	मूर्धन्य–दंत्य	ट>त – टमाटर > तमातर,	05
		ड>द – डकेत > दकेत,	05
		ण>न – गुण > गुन।	15
7	ऊष्म वर्ण	श>स – देश > देस,	15
		श>ष – आकाश > आकाष,	27
		ष>स – विषय > विसय,	03
		ष>श – विष > विश,	27
		स>श – सामान > शामान,	27
	अन्य	छ>स – कुछ > कुस,	03
		छ>च – कुछ > कुच	04
		च>स – सच > सस	05
9	अनुनासिक–निरनुनासिक	ँ>× –हाँ>हा, पहुँच>पहुच,	16
		योग	17

4.3.4.2. कारण :

उच्चारणगत त्रुटियाँ विभिन्न कारणों की वजह से होती हैं। गुजराती भाषी छात्रों की उच्चारणगत त्रुटियाँ का विवेचन, विश्लेषण के पश्चात् उन त्रुटियों के कारणों का निर्धारण करने का प्रयास किया जा रहा हैं, जिनकी वजह से गुजराती भाषी छात्र हिंदी उच्चारणगत में त्रुटियाँ करते हैं। मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

1. शुद्ध उच्चारण के ज्ञान का अभाव,
2. देवनागरी लिपि और उनके प्रयोग–विषयक समुचित जानकारी का अभाव,
3. परंपरागत उच्चारण का ज्ञान,
4. उच्चारण की अस्पष्टता,
5. मातृभाषा का प्रभाव,
6. पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि
7. दोषपूर्ण शिक्षण,
8. शिक्षक–छात्र के बीच अच्छे संबंध का न होना,
9. माहौल का अभाव,
10. उच्चार अभ्यास का अभाव,
11. कमजोर स्मरण शक्ति।

4.3.4.3. समाधान के सुझाव :

गुजराती भाषी छात्रों की उच्चारणगत त्रुटियों की समस्या को दूर करने हेतू समसधान के व्यवहारिक सुझाव देने उचित होगा। अतः कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

1. शुद्ध उच्चारण का ज्ञान कराना।
2. देवनागरी लिपि और उनके प्रयोग–विषयक समुचित जानकारी देना।
3. परंपरागत उच्चारणग और मानक उच्चारण का ज्ञान कराना।
4. उच्चारण की अस्पष्टता दूर करना।
5. मातृभाषा और लक्ष्य भाषा(हिंदी) को तुलनात्म रुप से पढ़ाना।
6. शिक्षण में सुधार।
7. शिक्षक–छात्र के बीच सौहादर्य पूर्ण संबंध स्थापित करना
8. छात्र को–

- निसंकोच उच्चारणगत में आने वाली हर समस्या अपने शिक्षक को बतानी चाहिए।
- परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा बोलने का आग्रह रखना चाहिए ।
- पाठशाला में अपना आपसी व्यवहार मातृभाषा को छोड़कर लक्ष्य भाषा (हिंदी) में करना चाहिए।

9. शिक्षक को–
   - परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा लिखने के साथ–साथ बोलने का भी आग्रह रखना चाहिए।
   - कठिन या क्लीस्ट उच्चारण का अभ्यास बोलकर तथा छात्रों से बुलवाकर करवाना चाहिए।
   - अपेक्षित शिक्षण–सहायक सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
   - भाषा की कक्षा में मातृभाषा का प्रयोग न करके लक्ष्य भाषा का ही प्रयोग करना चाहिए।
   - सही उच्चारण का ज्ञान देना चाहिए तथा उच्चारण और अर्थ भेद बताना चाहिए।
   - शिक्षक को चाहिए कि वह रोचकता के साथ पढ़ाए तथा साथ–साथ वह छात्रों के साथ वत्सलतापूर्ण व्यवहार करे ताकि छात्र अपनी हर समस्यां निःसंकोच रूप से खुलकर बता सकें।

४.४. गुजराती भाषी छात्रों के हिन्दी प्रयोग (व्याकरणिक पक्ष) से संबंधित त्रुटियाँ, निष्कर्ष, कारण और उनका समाधान

४.४.१. प्रस्तावना

४.४.२. हिंदी भाषा के व्याकरणिक पक्ष का परिचय

४.४.२.१. हिंदी भाषा के संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण की रूपावली

४.४.२.२. हिंदी भाषा में क्रियारूप रचना

४.४.२.३. हिंदी भाषा में शब्द रचना

४.४.२.४. हिंदी भाषा में विविध प्रयोग

४.४.२.५. हिंदी भाषा में वाक्य रचना

४.४.३. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी प्रयोग (व्याकरणिक पक्ष) से संबंधित त्रुटियाँ

४.४.३.१. संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप–रचनागत त्रुटियाँ

४.४.३.२. क्रिया–रूप रचनागत त्रुटियाँ

४.४.३.३. शब्द रचनागत त्रुटियाँ

४.४.३.४. विविध प्रयोगगत त्रुटियाँ

४.४.३.५. वाक्य रचनागत त्रुटियाँ

४.४.४. व्याकरणिक त्रुटियों का निष्कर्ष, कारण तथा समाधान के सुझाव

4.4.1. प्रस्तावना :

'व्याकरण' शब्द 'वि(विशेष रूप से) + आ(पूरी तरह से) + करण(व्याख्या करना)' से बना है। जिसका अर्थ है– 'भली प्रकार से समझना'। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि, नियमों की जानकारी देने वाले शास्त्र को ही व्याकरण कहा जाता है; और जिसके द्वारा भाषा का शुद्ध एवं सर्वमान्य या मानक रूप बोलना, समझना, लिखना तथा पढ़ना आता है। व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर कोई भी व्यक्ति भाषा का उचित एवं प्रभावशाली प्रयोग कर सकता है। अतः भाषा को अच्छी तरह सिखने के लिए व्याकरण सहायक होता है।

गुजराती भाषी छात्र हिंदी व्याकरण से संबंधित अनेक प्रकार की त्रुटियां करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण करने से पहले हिंदी भाषा के व्याकरणिक पक्ष का परिचय दिया गया है और इसके पश्चात प्राप्त त्रुटियों का विवेचन, निष्कर्ष, कारण तथा समाधान प्रस्तुत किए गए हैं।

4.4.2. हिंदी भाषा के व्याकरणिक पक्ष का परिचय :

4.4.2.1. हिंदी भाषा के संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण की रूपावली :

हिंदी भाषा में संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के रुप, लिंग, वचन एवं कारक प्रत्ययों से प्रभावित होती हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार हैं :

1. **हिंदी भाषा में संज्ञा के रूप :**

   किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा शब्द विकारी शब्द होते है, जैसे – विनय, विवेक, राम, सीता, भारत, गाय, पानी आदि।

   संज्ञा के चार प्रकार होते हैं– 1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. समुदायवाचक संज्ञा, 4. द्रव्यवाचक संज्ञा और 5. भाववाचक संज्ञा।

   1. व्यक्तिवाचक संज्ञा :

      जिस संज्ञा से किसी एक के (विशेष) नाम का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे – अरूण, उज्ज्वल, कृति, गंगा, भारत, हिमालय आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा :

जिस संज्ञा से किसी एक जाति के सामान्य नाम का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते है; जैसे– मनुष्य, स्त्री, पुरुष, लड़का, लड़की, माता पिता, पर्वत, नदी, झील आदि।

3. समुदायवाचक संज्ञा :

जिस जातिवाचक संज्ञा से समूह के नाम का बोध होता है, उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे – कक्षा, परिवार, टोली, भीड़, समाज, समूह, समुदाय, सेना, सभा आदि।

4. द्रव्यवाचक संज्ञा :

जिस जातिवाचक संज्ञा से गिनती में न आ सकने वाले पदार्थ का नाम का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते है; जैसे – अन्न, आटा, घी, चाय, जल, मिट्टी, लोहा, हवा, सोना आदि।

5. भाववाचक संज्ञा :

जिस संज्ञा से किसी धर्म (स्वभाव, गुण, भाव, विचार, दशा, क्रिया या दोष) सूचक नाम का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते है; जैसे – उष्णता, चाल, नम्रता, बुढ़ापा, मित्रता, लंबाई, शीतलता आदि।

2. हिंदी भाषा में सर्वनामों के रूप :

वाक्य में जो विकारी शब्द पहले या बादके संबंध के आधार पर संबंधित संज्ञा को सूचित करने के लिए आता है, उसे सर्वनाम कहते है। यह सभी प्रकार की संज्ञाओं (नामों) को सूचित करने के लिए आता है, इसलिए भी इसे सर्वनाम कहते है।

हिंदी भाषा में 'मैं', 'तू', 'यह', 'वह', 'हम', 'तुम', 'वे', 'ये', 'आप', 'सो', 'जो', 'कौन', 'क्या' 'कोई', 'कुछ' आदि सर्वनाम प्रचलित हैं।

हिंदी भाषा में सर्वनामों के छह प्रकार प्रचलित हैं :

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – 'मैं', 'तू', 'हम', 'तुम', 'आप'(आदरसूचक) :

पुरुषवाचक सर्वनाम उन सर्वनामों को कहते है जिनमें से कुछ सर्वनाम बोलने वालोको सूचित करते हैं, कुछ सर्वनाम सुननेवाले को सूचित करते हैं और कुछ सर्वनाम इन दोनों के अतिरिक्त किसी तीसरे को सूचित करते हैं। इसलिए पुरुषवाचक सर्वनामों के तीन प्रकार होते हैं : 1. उत्तमपुरुष सर्वनाम, 2. मध्यमपुरुष सर्वनाम और 3. अन्यपुरुष सर्वनाम।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम – 'यह', 'वह', 'वे', 'ये', 'सो' :
जिस सर्वनाम से किसी के विषय में निश्चय का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है; 'यह', 'वह' एकवचन और 'वे', 'ये' बहुवचन निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

3. निजवाचक सर्वनाम – 'आप' :
जिस सर्वनाम से समानाधिकरण के रूप में उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष या अन्यपुरुष का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

4. संबंधवाचक सर्वनाम – 'जो' :
एक उपवाक्य की संज्ञा या सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ बताने के लिए जिस सर्वनाम का उपयोग होता है, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – 'कौन', 'क्या' :
जिस सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में प्रश्न का बोध होता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

6. अनिश्चयवाचक सर्वनाम : 'कोई', 'कुछ' :
जिस सर्वनाम से किसी के विषय में अनिश्चय सूचित होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

3. हिंदी भाषा में विशेषण के रूप :

उस विकारी शब्द को विशेषण कहते हैं, जिससे किसी की विशेषता का अर्थबोध होता है और जिस किसी की विशेषता का अर्थबोध होता है, उसे विशेष्य कहते हैं।

हिंदी भाषा में विशेषण के तीन प्रकार होते हैं – 1. सार्वनामिक विशेषण, 2. गुणवाचक विशेषण और 3. संख्यावाचक विशेषण।

1. सार्वनामिक विशेषण :
   सर्वनामों से बननेवाले विशेषणों को सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। पुरुषवाचक – 'मैं', 'तू', 'हम', 'तुम' और निजवाचक 'आप' को छोडकर वाक्य में जब संज्ञा के साथ अन्य सर्वनाम का प्रयोग होता है, तब उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं; जैसे – वह लड़की आयी है।

2. गुणवाचक विशेषण :
   जिस विशेषण से विशेष्य के गुण, दशा, आकार, रंग, स्थान और काल का अर्थबोध होता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे – सुंदर लड़का आया।

   इसके मुख्य पांच प्रकार होते हैं : 1. गुणबोधक विशेषण, 2. दशाबोधक विशेषण, 3. रंगबोधक विशेषण, 4. स्थानबोधक विशेषण, 5. कालबोधक विशेषण आदि।

3. संख्यावाचक विशेषण :
   संख्यावाचक विशेषण उसे कहते हैं, जिससे विशेष्य का संख्यासंबंधी अर्थबोध होता है। इसके मुख्य तीन प्रकार होते हैं : 1. निश्चित संख्यावाचक विशेषण, 2. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण और 3. परिमाणवाचक विशेषण।

4.4.2.2. हिंदी भाषा में क्रियारूप रचना :

जिस परिवर्तनशील (विकारी) शब्द के प्रयोग से किसी के विषय में कुछ कहने अर्थात् कुछ विधान करने का काम होता है, उस शब्द को क्रिया कहते हैं; जैसे– सूर्य तारा है। चंद्र ग्रह है। हवा चली । पानी बरसेगा।

'है' शब्द से वाक्य में 'सूर्य' और दूसरे वाक्य में 'चंद्र' के विषय में विधान करने का काम हुआ है। 'चली' शब्द से तीसरे वक्य में 'हवा' के विषय में और 'बरसेगा' शब्द से चौथे वाक्य में 'पानी' के विषय में विधान करने का काम हुआ है। इसलिए 'है, चली, बरसेगा' ये क्रियाएं हैं।

4.4.2.3. हिंदी भाषा में शब्द रचना :

उच्चारण की दृष्टि से भाषा की लघुतम इकाई ध्वनि है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 'शब्दविज्ञान' में शब्द की परिभाषा देते हुए विशद विवेचन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार "भाषा की सार्थक, लघुतम और स्वतंत्र इकाई शब्द है।

हिंदी भाषा में रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद होते हैं–

1. **मूल शब्द :**

   मूल शब्द या रूढ़ शब्द वे शब्द हैं जिनके सार्थक खंड न किए जा सकें। ऐसे शब्द हिंदी भाषा के मुख्य आधार शब्द हैं। जैसे– आँख, मैं, गाय आदि।

2. **यौगिक शब्द :**

   जिन शब्दों के सार्थक खंड किए जा सकें, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं। ऐसे शब्द उपसर्ग या प्रत्यय आदि के योग से बनते हैं; जैसे – सुंगध = सु + गंध, सुंदरता = सुदर + ता, सफलता = सफल + ता, आदि।

   हिंदी भाषा में यौगिक शब्दों के रचना में निम्नलिखित प्रक्रिया दृष्टिगत होती है :

   1. धातु + धातु = खेलकूद, मारपीट, आदि।
   2. मूल शब्द + मूल शब्द = माँ–बाप, माता–पिता, आदि।
   3. धातु + मूल शब्द = हँसमुख, आदि।
   4. मूल शब्द + धातु = चिड़ीमार, आदि।

   यौगिक शब्द–रचना में समासों की प्रमुख भूमिका होती है। हिंदी में समासों के छह प्रकार हैं– 1. द्वन्द्व, 2. द्विगु, 3. तत्पुरुष, 4. कर्मधारय, 5. अव्ययीभाव, 6. बहुब्रीहि।

पुनरुक्ति :
'पुनरुक्ति' से भी यौगिक शब्दों की रचना होती है; यथा–
पूर्ण पुनरुक्ति – पास–पास, हरा–हरा, आदि।
अपूर्ण पुनरुक्ति – बीचबचाव, बालबच्चे, कामकाज, आदि।

3. **योगरूढ़ शब्द :**
जिन शब्दों के सार्थक खंड तो किए जा सके किंतु अर्थ की दृष्टि से जो रूढ़ हो, अर्थात् अर्थ की दृष्टि से ऐसे शब्दों के खंड नहीं हो सकते; यथा: लम्बोदर (लंबा + उदर), दशानन (दशा + आनन)– ये दोनों शब्द क्रमशः गणेश एवं रावण के अर्थ में प्रचलित हैं।

हिंदी भाषा में प्रत्यय, समास एवं पुनरुक्ति के माध्यम से शब्दों की रचना होती हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

1. **प्रत्यय :**
हिंदी भाषा में क्रिया और नामिक के साथ पूर्व–प्रत्ययों (उपसर्गों) तथा पर–प्रत्ययों (परसर्गों/क्रमशः कृत और तद्धित) के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा–

1.1. **पूर्व–प्रत्यय :**
हिंदी में अ, अन्, अव, अप, आ, उत्, उप, कु, सम्, निः, प्र, परि, वि, ये, आदि पूर्व–प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होतीं है; यथा–
अ + न्याय = अन्याय, अप + मान = अपमान आदि।

1.2. **कृत प्रत्यय :**
हिंदी में मूल धातुओं के साथ अन्, अंत, आव, आई, आउ, ई, अक्कड़, आन, आवट आदि कृत प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा– चल + अन् = चलन, पढ़ + आई = पढ़ाई आदि।

1.3. **तद्धित प्रत्यय :**
हिंदी में मूल शब्दों साथ इन, आर, आई, आपा, आस, इया, ई, इला, आ, गर, दार, वान, नी, आदि तद्धित प्रत्ययों के संयोग से मिश्र शब्दों की रचना होती है; यथा – धोबी + इन = धोबिन, मिठा + आई = मिठाई, आदि।

4.4.2.4. हिंदी भाषा में विविध प्रयोग :

अन्य भाषा के रूप में हिंदी अधिगम के समस्यात्मक बिन्दुओं की पहचान के लिए यह आवश्यक है कि उसके विभिन्न प्रयोगों का परिचय प्राप्त किया जाए। इसी दृष्टि से हिंदी भाषा में लिंग, वचन और काल आदि के प्रयोगों का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. हिंदी भाषा में लिंग व्यवस्था :

'लिंग' शब्द अंग्रजी के 'Gender' शब्द के लिए प्रयुक्त होता है। लिंग शब्द का अर्थ है चिह्न या पहचान का साधन। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं। हिंदी में दो लिंग हैं– पुल्लिग और स्त्रीलिंग।

2. हिंदी भाषा में वचन व्यवस्था :

शब्द के जिस रूप से एक अथवा अनेक का बोध होता है उसे 'वचन' कहते हैं। हिंदी में वचन दो हैं– एकवचन तथा बहुवचन।

3. हिंदी भाषा में काल का प्रयोग :

प्रायः लोग 'काल' और 'समय' को एक ही मान लेते हैं। परंतु 'काल' और 'समय' एक नहीं हैं। 'समय' एक भौतिक सत्य है तथा 'काल' एक व्याकरणिक इकाई हैं। समय के प्रति वक्ता का मानसिक बोध जो भाषा में व्यक्त होता है वही 'काल' है।

चूँकि 'समय' को भूत, वर्तमान तथा भविष्य तीन वर्गों में बाँट लिया जाता है, उसी के आधार पर 'काल' को भी परंपरागत व्याकरण में वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्य काल तीन वर्गों में बाँट लिया जाता है। इसके लिए 'कमशः *'है', 'था'* तथा *'गा'* काल सूचक चिह्नों का प्रयोग होता है।

4.4.2.5. हिंदी भाषा में वाक्य रचना :

हिंदी भाषा में रचना के आधार पर वाक्य के दो प्रकार होते हैं :

1. सरल वाक्य और
2. असरल वाक्य या जटिल वाक्य।

1. **सरल वाक्य :**

सरल वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है; जैसे – राम गया।

2. **असरल वाक्य या जटिल वाक्य :**

असरल वाक्य के दो भेद होते हैं :

1. मिश्र वाक्य, और
2. संयुक्त वाक्य।

1. **मिश्र वाक्य :**

मिश्र वाक्य उन वाक्यों को कहते हैं जिनमें कम से कम दो उपवाक्य होते हैं तथा इनमें से एक मुख्य या स्वतंत्र उपवाक्य होता है तथा दूसरा गौण या आश्रित उपवाक्य होता हैं; जैसे –

'जो लोग हिंदी जानते हैं, उन्हें बैंक का हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण देने के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।'

उपर्युक्त वाक्य में दो उपवाक्यों का प्रयोग किया जाता है – 'जो लोग हिंदी जानते है' तथा ' उन्हें बैंक का हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण देने के लिए हिंदी कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।' पहले उपवाक्य में वाक्य का गौण कथन तथा दूसरे उपवाक्य में वाक्य का मुख्य कथन है। इन दोनों उपवाक्यों के बिच आश्रय–आश्रित संबंध है। अतः उपर्युक्त वाक्य मिश्र वाक्य है।

2. **संयुक्त वाक्य :**

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, 'जिस वाक्य में कोई भी उपवाक्य प्रधान अथवा आश्रित न हो, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।' उनके अनुसार जब एक से अधिक सरल वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाया गया हो तथा वे समान स्तर के हो अर्थात् कोई न तो प्रधान हो और न कोई आश्रित हो तो उस वाक्य को संयुक्त वाक्य कहते हैं। जैसे – 'राम गया लेकिन सीता आ गई' संयुक्त वाक्य है जिसमें 'राम गया' तथा 'सीता आ गई' – ये दो सरल वाक्य इस प्रकार जोडे गए हैं कि दोनों में कोई मुख्य या गौण नहीं है, दोनों समान स्तर के हैं।

4.4.3. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी प्रयोग (व्याकरणिक पक्ष) से संबंधित त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्रों द्वारा की गई व्याकरण पक्ष से संबंधित त्रुटियों को निम्नलिखित शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया हैं।

4.4.3.1. संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप–रचनागत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूपों की पहचान करने में अनेक त्रुटियाँ करते हैं। प्रश्नावली तथा मुक्त रचना के आधर पर प्राप्त त्रुटियों को विभिन्न वर्गों में वर्गिकृत किया गया है। इनका विवेचन तथा विश्लेषण निम्नवत् है :

1. **संज्ञा रूप रचनागत त्रुटियाँ :**
   गुजराती भाषी छात्र संज्ञा रूपों की पहेचान में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। परीक्षण के आधार संज्ञा रूपों की पहेचान करने में 45 प्रतिशत त्रुटियाँ पायी गयी।
2. **सर्वनाम रूप रचनागत त्रुटियाँ :**
   गुजराती भाषी छात्र वाक्य में से सर्वनाम रूपों की पहेचान करने में त्रुटियाँ करते हैं। परीक्षण में 15 प्रतिशत त्रुटियां प्राप्त हुई।
3. **विशेषण रूप–रचनागत त्रुटियाँ :**
   गुजराती भाषी छात्र वाक्य में से विशेषण रूपों की पहेचान करने में त्रुटियाँ करते हैं। परीक्षण में 13 प्रतिशत त्रुटियां प्राप्त हुई।

सारिणी–5 : 4.4.3.1. छात्रों की संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप–रचनागत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटि बिंदु	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	संज्ञा	संज्ञा रुप की पहचान	अशुद्ध पहचान	45
2	सर्वनाम	सर्वनाम रुप की पहचान		15
3	विशेषण	विशेषण रुप की पहचान		13
योग				24

4.4.3.2. क्रिया–रूप रचनागत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र किया रूप–रचनागत विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं; यथा–

मैंने कई लड़के देखा (देखें), मैंने एक लड़की देखा (देखी), मैंने कई लड़कियाँ देखा (देखीं), मैंने एक लड़की को देखा (देखी) आदि। प्रश्नावली के आधार इस प्रकार की किया–रूप रचनागत त्रुटियाँ 24 प्रतिशत प्राप्त हुई।

सारिणी–6 : 4.4.3.2. छात्रों की किया–रूप रचनागत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटि बिंदु	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	किया	किया रूपों का वाक्य में प्रयोग	अशुद्ध प्रयोग	40
2	किया रूप			23
3	सहायक किया			10
योग				24

4.4.3.3. शब्द रचनागत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र शब्द रचनागत विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। जिसका विवेचन निम्नवत् है।

1. **प्रत्यय–प्रयोग संबंधि त्रुटियाँ :**

   गुजराती भाषी छात्रों की प्रत्यय–प्रयोग संबंधि तीन प्रकार की त्रुटियाँ सामने आयी हैं – उपसर्ग (पूर्व–प्रत्यय), कृत प्रत्यय (पर–प्रत्यय), तथा तद्धित(पर–प्रत्यय) से संबंधित त्रुटियाँ। इनका विश्लेषण निम्नलिखित क्रम में किया गया हैं :

   प्रश्नावली के आधार उपसर्ग (पूर्व–प्रत्यय; अ + न्याय = अन्याय) की 6 प्रतिशत, कृत प्रत्यय (पर–प्रत्य;चल + अन् = चलन) की 10 प्रतिशत तथा तद्धित(पर–प्रत्यय;धोबी+इन =धोबिन) की 23 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

2. **समास रचना की त्रुटियाँ :**

   समास रचना की त्रुटियाँ में तत्पुरूष, द्विगु, कर्मधारय, द्वंद्व, बहुव्रीहि तथा अव्ययीभाव समास रचना की त्रुटियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। इनका विश्लेषण निम्नलिखित क्रम में किया गया हैं :

   प्रश्नावली के आधार समास रचना की त्रुटियाँ में तत्पुरूष (राम का राज्य = रामराज्य) की 36 प्रतिशत, द्विगु (नौ+रत्न =नवरत्न) की 36 प्रतिशत,

कर्मधारय (पीत + अम्बर = पीताम्बर) की 40 प्रतिशत, द्वंद्व (रात और दिन = रातदिन) की 9 प्रतिशत, बहुव्रीहि(गिरि + धर = गिरिधर) की 15 प्रतिशत तथा अव्ययीभाव (दिन + दिन = प्रतिदिन) की 30 प्रतिशत त्रुटियाँ दृष्टिगोचर हुई।

सारिणी–7 : 4.4.3.3. छात्रों की शब्द–रचनागत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटि बिंदु	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	प्रत्यय प्रयोग	उपसर्ग	अशुद्ध संयोजन	06
		कृत प्रत्यय		10
		तद्धित प्रत्यय		23
2	समाच रचना	तत्पुरूष	अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव	36
		द्विगु		36
		कर्मधारय		40
		द्वंद्व		09
		ब्हुव्रीहि		15
		अव्ययीभाव		30
योग				23

4.4.3.4. विविध प्रयोगगत त्रुटियाँ :

अन्य भाषा के रूप में हिंदी अधिगम के समस्यात्मक बिन्दुओं की पहचान के लिए विविध प्रयोगगत के अंतर्गत लिंग, वचन और काल आदि के प्रयोगों की त्रुटियाँ का विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. **लिंग :**

   गुजराती भाषी छात्र शब्द की लिंग परिवर्तन करने में अनेक त्रुटियाँ करते हैं। परीक्षण में 60 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

2. **वचन :**

   गुजराती भाषी छात्र शब्द के वचन परिवर्तन करने में अनेक त्रुटियाँ करते हैं। परीक्षण में 47 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

3. **काल :**

   गुजराती भाषी छात्र काल का सही प्रयोग नहीं कर पातें। परीक्षण में तीनों– भूत, वर्तमान तथा भविष्य काल की त्रुटियाँ प्राप्त हुई। जिसमें भूतकाल की

24 प्रतिशत, वर्तमान काल की 19 प्रतिशत तथा भविष्य काल की 21 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

सारिणी–8 : 4.4.3.4. छात्रों की विविध प्रयोगगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटि बिंदु		त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	लिंग		लिंग परिवर्तन	अशुद्ध लिंग परिवर्तन	60
2	वचन		वचन परिवर्तन	अशुद्ध वचन परिवर्तन	47
3	काल	भूत	काल परिवर्तन	अशुद्ध काल परिवर्तन	24
		वर्तमान			19
		भविष्य			21
योग					34

4.4.3.5. वाक्य रचनागत त्रुटियाँ :

भाषा का प्रमुख कार्य भावाभिव्यक्ति है और किसी भाव की संपूर्ण अभिव्यक्ति वाक्य के माध्यम से होती है। वास्तव में, भाव हमारे मन में अव्यक्त वाक्य के रूप में विद्यमान होते हैं; ध्वनिप्रतिकों या लिपिचिह्नों का आधार पाने पर वाक्य का व्यक्त रूप सामने आता है। इस प्रकार, व्यापक परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि मनुष्य जो भी सोचता है या अभिव्यक्त करता है, वह वाक्य के माध्यम से ही करता है। इस तरह सिद्ध होता है कि भावाभिव्यक्ति के संदर्भ में वाक्य भाषा की प्रथम तथा सहज इकाई है।

गुजराती भाषी छात्र वाक्य रचना संबंधित अनेक त्रुटियाँ करते हैं। परीक्षण के आधार पर छात्रों ने 'सरल वाक्य में से संयुक्त वाक्य' बनाने में 74 प्रतिशत त्रुटियाँ की।

सारिणी–9 : 4.4.3.5. छात्रों की वाक्य–रचनागत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटि बिंदु	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	वाक्य	वाक्य परिवर्तन	अशुद्ध वाक्य परिवर्तन	74
योग				74

4.4.4. व्याकरणिक त्रुटियों का निष्कर्ष, कारण तथा समाधान के सुझाव :

परीक्षण के आधार पर प्राप्त व्याकरणगत त्रुटियों के विवेचन के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आए हैं। इन निष्कर्ष के आधार पर त्रुटियाँ होने का कारण तथा समाधान के सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

4.4.4.1. निष्कर्ष :

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी व्याकरणगत कुल 28 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। इन त्रुटियों को पांच भागों में विभाजित कर सकते हैं :

1. छात्रों की संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप–रचनागत त्रुटियाँ,
2. छात्रों की किया–रूप रचनागत त्रुटियाँ,
3. छात्रों की शब्द–रचनागत त्रुटियाँ,
4. छात्रों की विविध प्रयोगगत त्रुटियाँ और
5. छात्रों की वाक्य–रचनागत त्रुटियाँ ।

1. छात्रों की संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूप–रचनागत त्रुटियाँ :

परीक्षण में गुजराती भाषी छात्रों की संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण रूपों से संबंधित कुल मिलाकर 24 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। जिसमें संज्ञा रूपों की पहचान करने में 45 प्रतिशत, सर्वनाम रूपों की पहचान करने में 15 प्रतिशत और विशेषण रूपों की पहचान करने में 13 प्रतिशत त्रुटियां प्राप्त हुई।

2. छात्रों की किया–रूप रचनागत त्रुटियाँ :

परीक्षण में गुजराती भाषी छात्रों की किया–रूप रचनागत कुल मिलाकर 24 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

3. छात्रों की शब्द–रचनागत त्रुटियाँ :

परीक्षण में गुजराती भाषी छात्रों की शब्द–रचनागत कुल मिलाकर 23 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। जिसमें प्रत्यय प्रयोग के अंतर्गत–उपसर्ग की 06 प्रतिशत, कृत प्रत्यय की 10 प्रतिशत और तद्धित प्रत्यय की 23 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई तथा समास रचना के अंतर्गत– तत्पुरूष समास की 36 प्रतिशत, द्विगु समास की 36 प्रतिशत, कर्मधारय समास की 40 प्रतिशत, द्वंद्व समास की 09 प्रतिशत, बहुव्रीहि समास की 15 प्रतिशत और अव्ययीभाव समास की 30 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

4. छात्रों की विविध प्रयोगगत त्रुटियाँ :

विविध प्रयोगगत के अंतर्गत लिंग, वचन और काल के प्रयोगों की त्रुटियाँ का विवेचन किया गया हैं। परीक्षण में गुजराती भाषी छात्रों की लिंग, वचन और काल के प्रयोगों की कुल मिलाकर 34 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई। जिसमें सें

छात्रों की लिंग परिवर्तन करने में 60 प्रतिशत, वचन परिवर्तन करने में 47 प्रतिशत और काल का सही प्रयोग करने में तीनों काल भूतकाल में 24 प्रतिशत, वर्तमान काल में 19 प्रतिशत और भविष्य काल में 21 प्रतिशत त्रुटियाँ प्राप्त हुई।

5. **छात्रों की वाक्य–रचनागत त्रुटियाँ :**

परीक्षण में गुजराती भाषी छात्रों ने सरल वाक्य में से संयुक्त वाक्य बनाने में 74 प्रतिशत त्रुटियाँ की हैं।

सारिणी–10 : 4.4.4. समग्र व्याकरणिक त्रुटियाँ :

क्र.	त्रुटि बिंदु	त्रुटियों के प्रकार	त्रुटियों की प्रवृत्तियाँ	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	संज्ञा	संज्ञा रुप की पहचान	अशुद्ध पहचान	45
2	सर्वनाम	सर्वनाम रुप की पहचान		15
3	विशेषण	विशेषण रुप की पहचान		13
4	क्रिया	क्रिया रूपों का वाक्य में प्रयोग	अशुद्ध प्रयोग	40
5	क्रिया रूप			23
6	सहायक क्रिया			10
7	प्रत्यय प्रयोग	उपसर्ग	अशुद्ध संयोजन	06
		कृत प्रत्यय		10
		तद्धित प्रत्यय		23
8	समाच रचना	तत्पुरूष	अपेक्षित रूप स्वनिमिक परिवर्तन का अभाव	36
		द्विगु		36
		कर्मधारय		40
		द्वंद्व		09
		बहुव्रीहि		15
		अव्ययीभाव		30
9	लिंग	लिंग परिवर्तन	अशुद्ध लिंग परिवर्तन	60
10	वचन	वचन परिवर्तन	अशुद्ध वचन परिवर्तन	47
11	काल – भूत	काल परिवर्तन	अशुद्ध काल परिवर्तन	24
	वर्तमान			19
	भविष्य			21
12	वाक्य	वाक्य परिवर्तन	अशुद्ध वाक्य परिवर्तन	74
		योग		28

4.4.4.2. कारण :

व्याकरणिक त्रुटियाँ विभिन्न कारणों की वजह से होती हैं। गुजराती भाषी छात्रों की व्याकरणगत त्रुटियाँ का विवेचन, विश्लेषण के पश्चात् उन त्रुटियों के कारणों का निर्धारण करने का प्रयास किया जा रहा हैं; जिनकी वजह से गुजराती भाषी छात्र हिंदी व्याकरण में त्रुटियाँ करते हैं। मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

1. व्याकरणिक ज्ञान का अभाव,
2. व्याकरण के नियमों की अस्पष्टता,
3. नियमों का अपूर्ण प्रयोग,
4. मातृभाषा का प्रभाव,
5. पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि
6. दोषपूर्ण शिक्षण,
7. शिक्षक–छात्र के बीच अच्छे संबंध का न होना,
8. कमजोर स्मरण शक्ति।

4.4.4.3. समाधान के सुझाव :

गुजराती भाषी छात्रों की व्याकरणगत त्रुटियों की समस्याँ को दूर करने हेतू समसधान के व्यवहारिक सुझाव देने उचित होगा। अतः कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

1. व्याकरण का ज्ञान कराना,
2. व्याकरण के नियमों की अस्पष्टता दूर करना,
3. व्याकरण के नियमों का पूर्ण प्रयोग करना,
4. मातृभाषा और लक्ष्य भाषा(हिंदी) के व्याकरण को तुलनात्म रुप से पढ़ाना,
5. शिक्षण में सुधार,
6. शिक्षक–छात्र के बीच सौहार्द पूर्ण संबंध स्थापित करना,
7. छात्र को–
   - अध्ययन में आने वाली हर समस्या अपने शिक्षक को बतानी चाहिए।
8. शिक्षक को–
   - व्याकरण निष्ठ भाषा–प्रयोग का आग्रह रखना चाहिए ।

- कठिन या क्लीस्ट व्याकरणिक बिंदु के शिक्षण में विशेष ध्यान देना चाहिए तथा श्यामपट्ट पर लिख कर स्पष्ट करना चाहिए।
- व्याकरण के विभिन्न बिंदुओं को व्यवहारिक उदाहरणों देकर पढ़ाना चाहिए।
- अपेक्षित शिक्षण–सहायक सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
- शिक्षक को चाहिए कि वह रोचकता के साथा पढ़ाए तथा साथ–साथ वह छात्रों के साथ वात्सलतापूर्ण व्यवहार करे ताकि छात्र अपनी हर समस्यां निःसंकोच रूप से खुलकर बता सके।

४.५. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी वर्तनीगत त्रुटियाँ, निष्कर्ष, कारण और उनका समाधान

४.५.१. प्रस्तावना

४.५.२. हिंदी भाषा की वर्तनी व्यवस्था का परिचय

४.५.३. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी वर्तनी से संबंधित त्रुटियाँ

४.५.४. वर्तनीगत त्रुटियों का निष्कर्ष, कारण तथा समाधान के सुझाव

4.5.1. प्रस्तावना :

वर्तनीगत शुद्धता लिखित भाषा की शुद्धता का अनिवार्य अंग है। उसके अभाव में भाषा की शक्ति अपना महत्व खो देती है। अशुद्ध वर्तनी भाषा का एक विकृत रुप प्रस्तुत करती है तथा संप्रेषणियता की दृष्टि से व्यवधान उपस्थित करती है।

यदि अशुद्ध वर्तनी में लिखित सामग्री सह्रय सीमा के अंतर्गत नहीं होती है, तब वह पाठक के लिए अधिक कठिनाई उत्पन्न करती है। इसलिए शिक्षित जन समुदाय से यह अपेक्ष की जाती है कि वह शुद्ध और मान्य वर्तनी में लिखित सामग्री प्रस्तुत करें।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि गुजराती भाषी छात्र हिंदी वर्णो को सुडोल रूप में लिखते हैं किंतु जहाँ तक वर्तनी का संबंध है, उसमें अनेक प्रकार की त्रुटियाँ मिलती हैं। फलस्वरूप उनकी लिखित सामग्री ग्रहणशीलता की सह्रय सीमा को पार कर जाती है। इस आधर पर छात्रों की 'हिंदी सीखने की समस्याओं' में उनके द्वारा की गई हिंदी वर्तनीगत त्रुटियों का विश्लेषण निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

4.5.2. हिंदी भाषा की वर्तनी व्यवस्था का परिचय :

हिंदी की लिपि देवनागरी है। चूँकि वर्णों का संबंध लिपि से होता है अतः देवनागरी लिपि की वर्ण व्यवस्था पर विचार करना सर्वथा अभीष्ट होगा।

भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा स्वीकृत हो जाने के फलस्वरूप हिंदी का मानक रूप निर्धारित करना बहुत आवश्यक था, ताकि वर्णमाला में सर्वत्र एकरूपता रहे और टाइपराइटर आदि आधुनिक यंत्रों के उपयोंग में लिपि की अनेकरूपता बाधक न हो।

इन सभी बातों को ध्यान में रखकर केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने शीर्षस्थ विद्वानों आदि के साथ वर्षों के विचार–विमर्श के पश्चात् हिंदी वर्णमाला तथा अंकों का जो मानक स्वरूप निर्धरित किया, वह इस प्रकार है :

मानक हिंदी वर्णमाला :

स्वर :	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ :		ा	ि	ी	ु	ू	े	ै	ो	ौ

अनुस्वार : (अं)

विसर्ग : (अः)

अनुनासिकता चिह्न : ँ

व्यंजन : क, ख, ग, घ, ङ

च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़

त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व, ळ

श, ष, स, ह

संयुक्त व्यंजन : क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

हल् चिह्न : (्)

गृहीत स्वर : ऑ, क़, ख़, ग़, ज़, फ़

देवनागरी अंक : १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ०

भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 0

संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होनेवाले अंकों रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा, परंतु राष्ट्रपति संघ के किसी भी राजकीय प्रयोजन के लिए भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के साथ–साथ देवनागरी रूप का प्रयोग भी प्राधिकृत कर सकते हैं।

किसी भी भाषा की सीखने–सीखाने में सहायक या बाधक बनने वाले दो प्रमुख तत्व हैं : उसका व्याकरण और लिपि। लिपि का एक पक्ष है– सामान्य और विशिष्ट स्वनों के पृथक् प्रतीक–वर्णों की समृद्धि, उनका परस्पर स्पष्ट आकार– भेद, लिखावट में सरलता तथा स्थान– लाघव एवं प्रयत्न–लाघव।

लिपि का दूसरा पक्ष है– वर्तनी। एक ही स्वन को प्रकट करने के लिए विविध वर्णों का प्रयोग वर्तनी को जटिल बना देता है और यह लिपि का एक सामान्य दोष माना जाता है। यद्यपि देवनागरी लिपि में यह दोष न्यूनतम है, फिर भी, उसकी कुछ अपनी विशिष्ट कठिनाइयाँ भी हैं।

इन सभी कठिनाइयों को दूर कर हिंदी वर्तनी में एकरूपता लाने के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने सन् 1961 में एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की थी। समिति ने अप्रैल, 1962 में अपनी अंतिम सिफारिशें प्रस्तुत कीं, जिन्हें सरकारने स्वीकृत किया। इन्हें 1967 में 'देवनागरी हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' शीर्षक पुस्तिका में व्याख्या तथा उदाहरण सहीत प्रकाशित किया गया।

वर्तनी संबंधी अद्यतन नियम इस प्रकार हैं :

- संयुक्त वर्ण :
  1. खड़ी पाईवाले व्यजंन :
     खड़ी पाई वाले व्यजंनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए; यथा – व्यास, न्यास, ख्याति, स्वीकृति, आदि।

  2. अन्य व्यजंन :
     1. 'क' और 'फ' के संयुक्ताक्षर : पक्का, दफ्तर, आदि की तरह बनाए जाएँ।
     2. ड, छ, ट, ठ, ढ, द, और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ : यथा – वाङ्मय, विद्या, चिह्न, आदि।
     3. संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत् रहेंगे : यथा – प्रकार, धर्म, राष्ट्र।
     4. 'श्र' का प्रचलित रूप ही मान्य होगा। इसे 'श्न' के रूप में नहीं लिखा जाएगा। त+र के संयुक्त रूप के लिए 'त्र' के दोनों रूपों में से किसी एक के प्रयोग की छूट होगी। किंतु 'क्र' के रूप में नहीं लिखा जाएगा।
     5. हल् चिह्न वर्ण से बनने वाली संयुक्ताक्षर के द्वितीय व्यजंन के साथ 'इ' की मात्रा का प्रयोग संबंधित व्यजंन के तत्काल पूर्व ही कियां जाएगा, न कि पूरे युग्म से पूर्व; यथा– द्‌वितीय, बुद्‌धिमान, आदि (द्वितीय, बुद्धिमान, नहीं)।

- विभक्ति–चिह्न :
  1. हिंदी के विभक्ति चिह्न सभी प्रकार के संज्ञा शब्दों में प्रातिपदिक से पृथक् लिखे जाएँ; जैसे – राम ने, राम को, राम से, आदि। सर्वनाम शब्दों में ये चिह्न प्रातिपदिक के साथ मिलाकर लिखे जाएँ; जैसे – उसने, उसको, उससे, उसमें, आदि।
  2. सर्वनामों के साथ यदि दो विभक्ति चिह्नों हो, तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा पृथक लिखा जाएं; जैसे – उसके लिए, इसमें से, आदि।
  3. सर्वनाम और विभक्ति के बिच 'ही', 'तक', आदि का निपात हो, तो विभक्ती पृथक् लिखी जाएं; जैसे– आप ही के लिए, मुझ तक को, आदि।

- क्रियापद :

संयुक्त कियाओं में सभी अंगभूत कियाएं पृथक्–पृथक् लिखी जाएं; जैसे – पढ़ा करता है, आ सकता है, जाया करता है, आदि।

- हाइफन :

हाइफन का विधान स्पष्टता के लिए किया गया है :

1. द्वंद्व समास में पदो के बिच हाइफन रखा जाएं : जैसे – राम – लक्ष्मण, खाना–पिना, आदि।
2. सा. जैसा आदि से पूर्व हाइफन रखा जाएं; जैसे – तुम–सा, राम–जैसा, चाकू–से तीखे, आदि।
3. तत्पुरूष समास में हाइफन का प्रयोग केवल वही किया जाएं, जहाँ उसके बिना भ्रम होने की संभावना हो अन्यथा नहीं; जैसे– भू–तत्व। सामान्यतः तत्पुरूष समासों में हाइफन लगाने की आवश्यक्ता नहीं है; जैसे– रामराज्य, राजकुमार, गंगाजल, आदि।

   इसी तरह यदि 'अ–नख'(बिना नख का) समस्त पद में हाइफन न लगाया जाएं तो उसे 'अनख' पढ़े जाने से 'क्रोध' का अर्थ भी निकल सकता है। अ–नति(नम्रता का अभाव), अनति(थोड़ा) आदि समस्त पदों की यही स्थिति है। ये सभी युग्म वर्तनी और अर्थ दोनों दृष्टि से भिन्न–भिन्न शब्द है।

4. कठिन संधियों से बचने के लिए भी हाइफन का प्रयोग किया जा सकता है; जैसे – द्वि–अक्षर, द्वि–अर्थक, आदि।

- अव्यय :

अव्यय सदा पृथक् लिखे जाएं; जैसे – आपके साथ, यहाँ तक, महात्मा जी, श्री राम, आदि।

- श्रुतिमूलक 'य', 'व' :

1. श्रुतिमूलक 'य', 'व' का प्रयोग विकल्प से होता है, वहां न किया जाएं अर्थात् किए–किये, नई–नयी, हुआ–हुवा, आदि में से पहले (स्वरात्मक)

रूपों का ही प्रयोग किया जाएं। यह नियम क्रिया, विशेषण, अव्यय, आदि सभी रूपों और स्थितियों में लागू माना जाएं; जैसे– दिखाए गए, राम के लिए, नई दिल्ली, आदि।

2. जहां 'य' श्रुतिमूलक व्याकरणिक परिवर्तन न होकर शब्द का ही मूल तत्व हो, वहां वैकल्पिक श्रुतिमूलक स्वरात्मक परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है; जैसे– स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व, आदि। यहां स्थाई, अव्यईभाव, दाइत्व, नहीं लिखा जाएगा।

- अनुस्वार तथा अनुनासिकता :

अनुस्वार(ं) और अनुनासिकता चिह्न (ँ) दोनों प्रचलित रहेंगे।

1. संयुक्त व्यंजन के रूप में जहां पंचमाक्षर के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों में से कोई वर्ण को हो, तो एकरूपता और मुद्रण/लेखन के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए; जैसे– गंगा, चंचल, ठंडा, संध्या, संपादक, आदि में पंचमाक्षर के बाद उसी वर्ग का वर्ण आगे आता है, अतः पंचमाक्षर के स्थान पर अंनुस्वार का प्रयोग होगा (सम्पादक, सन्ध्या, ठण्डा आदि नहीं)। यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा वही पंचमाक्षर दूबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा; जैसे – वाङ्मय, अन्य, अन्न, सम्मेलन, सम्मति, चिन्मय, उन्मुख, आदि। अतः वांमय, अंय, अंत, संमेलन, संमति, चिंमय, उंमुख, आदि रूप ग्राह्य नहीं हैं।

2. चंद्रबिंदु के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की गुंजाइश रहती है, जैसे– हंस–हँस, अंगना–अँगना, आदि में। अतएव ऐसे भ्रम को दूर क़रने के लिए चंद्रबिंदु का प्रयोग अवश्य किया जाना चाहिए। किंतु जहाँ (विशेषकर शिरोरेखा के उपर जुडने वाली मात्रा के साथ) चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु (अनुस्वार चिह्न) का प्रयोग किसी प्रकार भ्रम उत्पन्न न करे, वहाँ चंद्रबिंदु के स्थान पर बिंदु के प्रयोग की छुट दी जा सकती है; जैसे– नहीं, में, मैं।

- विदेशी ध्वनियाँ :

1. अरबी–फारसी या अंग्रजी मूल के वे शब्द, जो हिंदी के अंग बन चुके हैं और जिनकी विदेशी ध्वनियों का हिंदी ध्वनियों में रूपांतर हो चुका है, हिंदी रूप में स्वीकार किए जा सकते हैं; जैसे – कलम, किला, दाग, आदि (क़लम, क़िला, दाग़ नहीं) पर जहां उनका शुद्ध विदेशी रूप में

प्रयोग अभीष्ट हो अथवा उच्चारणगत भेद बताना आवश्यक हो, वहाँ उनके हिंदी में प्रचलित रूपों में यथास्थान नुक्ते लगाए जाएँ; जैसे– खाना–ख़ाना, राज–राज़।

2. अंग्रेजी के जिन शब्दों में अर्धविवृत 'ऑ' ध्वनि का प्रयोग होता है, उनके शुद्ध रूप का हिंदी में प्रयोग अभीष्ट होने पर 'आ' की मात्रा (ा) के उपर अर्धचंद्र का प्रयोग किया जाए (ऑ)।
3. हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो–दो रूप बराबर चल रहे हैं। विद्वत्समाज में दोनों रूपों की एक–सी मान्यता है। फिलहाल इनकी एकरूपता आवश्यक नहीं समझी गई है। कुछ उदाहरण हैं– गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बरफ/बर्फ, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी आदि।

- हल् चिह्न :

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों, की वर्तनी में सामान्यतः संस्कृत रूप ही रखा जाए परंतु जिन शब्दों के प्रयोग में हिंदी में हल चिह्न लुप्त हो चुका है, उनमें उसको फिर से लगाने का यत्न न किया जाए, जैसे – 'महान', 'विद्वान', आदि के 'न' में।

- स्वन–परिवर्तन :

संस्कृतमूलक तत्सम शब्दों, की वर्तनी को ज्यों–का–त्यों गहण किया जाए। अतः 'ब्रह्मा' को 'ब्रम्हा', 'चिह्न' को 'चिन्ह', आदि में बदलाव उचित नहीं होगा। इसी प्रकार ग्रहीत, दृष्टव्य, प्रदर्शिनी, अत्याधिक, अनधिकार , आदि अशुद्ध प्रयोग ग्रह्य नहीं है। इसके स्थान पर क्रमशः गृहीत, द्रष्टव्य, प्रदर्शनी, अत्यधिक, अनाधिकार, ही लिखना चाहिए। जिन तत्सम शब्दों में तीन व्यंजन लुप्त हो गया है, उसे न लिखने की छूट है, जैसे– अद्‌र्ध/अर्द्ध, उज्जवल/उज्वल, तत्त्व/तत्व, आदि।

- विसर्ग :

संस्कृत के जिन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग होता है, वे यदि तत्सम रूप में प्रयुक्त हों, तो विसर्ग का प्रयोग अवश्य किया जाए, जैसे – 'दुःखानुभूति' में। यदि उस शब्द के तद्‌भव रूप में विसर्ग का लोप हो चुका हो, तो उस रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल जाएगा; जैसे 'दुख–दुख के साथी'।

■ 'ए', 'औ' का प्रयोग :

हिंदी में ऐ (ै), औ (ौ) का प्रयोग दो प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए होता है। पहले प्रकार की ध्वनियाँ 'है', 'और' आदि में हैं तथा दूसरे प्रकार की 'गवैया', 'कौवा' आदि में। इन दोनों ही प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए इन्हीं चिह्नों (ऐ, ै, औ, ौ) का प्रयोग किया जाए। 'गवय्या' , 'कव्वा' आदि नहीं।

■ पूर्वकालिक प्रत्यय :

पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे– मिलाकर, खाकर, पीकर, रो–रोकर, आदि।

■ अन्य नियम :

1. शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा।
2. फुलस्टोप को छोड़कर शेष विराम चिह्न वह ग्रहण कर लिए जाएँ जो अंग्रजी में प्रचलित हैं; यथा – (–, ; ?। ! : . =) (विसर्ग के चिह्न को ही कॉलन मान लिया जाए)।
3. पूर्णविराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग किया जाए।

4.5.3. गुजराती भाषी छात्रों की हिन्दी वर्तनी से संबंधित त्रुटियाँ :

परीक्षण के आधार पर गुजराती भाषी छात्रों द्वारा की गयी हिंदी वर्तनीगत त्रुटियों को मुख्य रुप से तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया हैं :

1. स्वर–वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ :
2. व्यंजन–वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ :
3. अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्न) की वर्तनीगत त्रुटियाँ

4.5.3.1. स्वर वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्र स्वर–वर्णों से संबंधित अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं। अग्रलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती हो जाती है :

1. ह्रस्व–दीर्घ :

छात्रों ने ह्रस्व वर्णों के स्थान पर दीर्घ वणों के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ की है; यथा –

अ>आ – अच्छा>आच्छा,

इ>ई – किताब>कीताब, नदियाँ>नदीयाँ, दिन>दीन, इनाम > ईनाम

उ>ऊ – दुख>दूख, बहुत>बहूत,

ठीक इसके विपरीत दीर्घ स्वर वर्णों के स्थान पर ह्रस्व स्वर वर्णों के प्रयोग की प्रवृत्ति भी स्पष्ट होती है; यथा –

आ>अ – हमारा>हमरा,

ई>इ – दीजिए >दिजिए, तीन>तिन,

ऊ>उ – दूर>दुर,

दीर्घ के स्थान पर ह्रस्वीकरण के प्रयोग की प्रवृत्ति ह्रस्व के स्थान पर दीर्घीकरण के प्रयोग की प्रवृत्ति से कम पायी गई।

2. **संयुक्त स्वर :**

गुजराती भाषी छात्रों ने संयुक्त व्यंजन के लेखन में 'ऐ' के स्थान पर 'ए' तथा 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग किया हैं; यथा –

ऐ>ए – ऐसा>एसा, पैदल>पेदल,

औ>ओ – औरत>ओरत, सौ>सो,

इन दोनों प्रकार की त्रुटियों की आवृत्ति लगभग समान है।

3. **अन्य :**

गुजराती भाषी छात्रों ने वर्तनी में एक स्वर के स्थान पर भिन्न स्वर के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ की हैं। नीचे लिखे उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जााती है:

अ>ए – सुबह>सुबेह,

अ>ओ – दोपहर>दोपोहर,

इ>ए – इकट्ठा>एकट्ठा,

उ>ओ – बहुत>बहोत, हुआ>होआ,

ऊ>ओ – जाऊँगा>जाओगा,

ए >इ~ई – बेचने>बिचने, मेला>मीला,

ऐ>इ – ऐसा>इसा,

आ>ओ – पाँच>पोच, गांधी>गोधी,

औ>ऊ – मौका>मुका

सारिणी–11 : 4.5.3.1. स्वर वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	दीर्घीकरण	अ > आ – अच्छा > आच्छा	02
		इ > ई – दिन>दीन	27
		उ > ऊ – बहुत > बहूत	17
2	ह्रस्वीकरण	आ > अ – हमारा > हमरा	05
		ई > इ – तीन > तिन	27
		ऊ > उ – दूर>दुर	21
3	संयुक्त स्वर	ऐ > ए – पैदल>पेदल	30
		औ>ओ – औरत>ओरत	24
4	अन्य	अ>ए – सुबह>सुबेह,	09
		अ>ओ – दोपहर>दोपोहर,	05
		इ>ए – इकट्ठा>एकट्ठा,	04
		उ>ओ – बहुत>बहोत,	30
		ऊ>ओ – जाऊँगा>जाओगा,	02
		ए>इ~ई–बेचने>बिचने,मेला>मीला,	13
		ऐ>इ – ऐसा>इसा,	11
		आ>ओ – पाँच>पोच,	10
		औ>ऊ – मौका>मुका	05
योग			14

4.5.3.2. व्यंजन–वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ :

परीक्षण के आधार पर गुजराती भाषी छात्रों ने व्यंजन वर्णों की वर्तनी संबंधी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ की हैं; इन त्रुटियों का विवेचन तथा विश्लेषण निम्नवत् है :

1. अल्पप्राण–महाप्राण :

छात्रों ने महाप्राण व्यंजन वर्णों के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया है। निम्नलिखित अदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

ख>क – मुखड़ा > मुकरा,

घ>ग – घर > गर,

झ>ज – झरना > जरना, समझ > समज,

ध>द – धरा > दरा, धनी > दनी,

फ>प – कफन > कपन,

भ>ब – आभार > आबार,

छ>च – कुछ > कुच

2. महाप्राण–अल्पप्राण :

उपर्युक्त त्रुटियों में महाप्राण व्यंजन वर्णों के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन वर्णों के प्रयोग की प्रवृति स्पष्ट होती है किन्तु ठीक इसके विपरीत त्रुटियाँ भी मिलती हैं; यथा –

त>थ – भूतल > भूथल,

इस प्रकार की त्रुटियों में अल्पप्राण व्यंजन वर्ण के स्थान पर महाप्राण व्यंजन वर्ण के प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है किन्तु इसकी आवृत्ति–गणना पहले प्रकार की त्रुटियों की अपेक्षा बहुत ही कम है।

3. अघोष–सघोष :

छात्रों ने सधोष व्यंजन वर्णों के स्थान पर अघोष वर्णों का प्रयोग किया है। अग्र लिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है :

ग>क – लोग > लोक,

4. मूर्धन्य–दंत्य :

गुजराती भाषी छात्रों ने मूर्धन्य वर्णों के स्थान पर दंत्य वर्णों के प्रयोग की अनेक प्रकार की त्रुटियां की हैं; यथा–

ट>त – टमाटर > तमातर,

ड>द – डाल > दाल, डकेत > दकेत,

ण>न – गुण > गुन,

5. ऊष्म वर्ण :

छात्रों ने ऊष्म वर्णों के प्रयोग में विभिन्न प्रकार की त्रुटियाँ की हैं; यथा–

श>स – आकाश > आकास, शुभ > सुभ, देश > देस,

श>ष – आकाश > आकाष,

ष>स – विष > विस, विषय > विसय,

ष>श – विष > विश,

स>श – सामान > शामान, सफेद > शफेद,

उपर्युक्त त्रुटियों में 'श' के स्थान पर 'स', 'ष' का प्रयोग तथा 'ष' के स्थान पर 'स', 'श' का प्रयोग और 'स' के स्थान पर 'श' का प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

6. अन्य :

गुजराती भाषी छात्रों ने कुछ व्यंजन वर्णों के स्थान पर अन्य व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया हैं; यथा–

छ>स – कुछ > कुस,

छ>च – कुछ > कुच,

च>स – सच > सस

7. संयुक्त व्यंजन :

गुजराती भाषी छात्रों ने हिंदी संयुक्त व्यंजन वर्णों की अनेक प्रकार की त्रुटियां की हैं; यथा –

कृपा>कर्पा, इनका>इन्का, जानता>जान्ता, कृपिया>कृप्या, स्कूल>सकूल, स्टेशन>इस्टेशन।

8. नूक्ता युक्त व्यंजन :

छात्रों नूक्ता युक्त व्यंजन वर्णों, बिना नूक्ता से लिखते हैं; यथा –

लड़का>लडका, लड़की>लडकी, पढ़ाई>पढाई, क़नून>कानून, ताक़>ताक, ख़बर> खबर, ग़ज़ल>गजल, गुज़र>गुजर, आफ़िस>आफिस, राज़>राज।

सारिणी–12 : 4.5.3.2. व्यंजन–वर्णों की वर्तनीगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	अल्पप्राण–महाप्राण	ख>क – मुखड़ा > मुकरा	17
		घ>ग – घर > गर	01
		झ>ज – समझ > समज	38
		ध>द – धरा > दरा	05
		फ>प – कफन > कपन	46
		भ>ब – आभार > आबार	03
		छ>च – कुछ > कुच	03
2	महाप्राण–अल्पप्राण	त>थ – भूतल > भूथल	30
2	घोस–सघोस	ग>क – लोग > लोक	05
3	मूर्धन्य–दंत्य	ट>त – टमाटर > तमातर,	05
		ड>द – डकेत > दकेत,	05
		ण>न – गुण > गुन।	15
4	ऊष्म वर्ण	श>स – देश > देस,	15
		श>ष – आकाश > आकाष,	27
		ष>स – विषय > विसय,	03
		ष>श – विष > विश,	27
		स>श – सामान > शामान,	27
	अन्य	छ>स – कुछ > कुस,	03
		छ>च – कुछ > कुच	04
		च>स – सच > सस	05
6	संयुक्त व्यंजन	कृपा>कर्पा,	11
7	नूक्ता युक्त व्यंजन	लड़का>लडका,	10
योग			14

9. **अनुनासिक और अनुस्वार (चिह्नों) की वर्तनीगत त्रुटियां :**

गुजराती भाषी छात्रों ने अनुनासिक और अनुस्वार (चिह्नों) संबंधित केवल अप्रयोग की त्रुटियां की हैं; यथा–

2. अनुनासिक 'ँ' का अप्रयोग :

   हाँ >हा, पहुँच>पहुच, गाँव>गाव, जहाँ >जहा।

   उपर्युक्त त्रुटियों में अनुनासिक के स्थान पर निरनुनासिक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है।

3. अनुस्वार ' ं ' का अप्रयोग :

   में>मे, मैं>मै, हैं>है, कहीं>कही, नहीं>नही, अहिंसा>अहिसा ।

   उपर्युक्त त्रुटियों में अनुस्वार चिह्न का प्रयोग नहीं हुआ।

सारिणी–13 : 4.5.3.3. अनुनासिक और अनुस्वार (चिह्नों) की वर्तनीगत त्रुटियां :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	अनुनासिक–निरनुनासिक	ँ > × – हाँ >हा, पहुँच > पहुच, कहाँ > कहा।	16
2	अनुस्वार ' ं 'का अप्रयोग	ं >×– में>मे, मैं>मै, नहीं>नही, अहिंसा>अहिसा ।	10
योग			13

4.5.4. वर्तनीगत त्रुटियों का निष्कर्ष, कारण तथा समाधान के सुझाव :

परीक्षण के आधार पर प्राप्त वर्तनीगत त्रुअियों के विवेचन के पश्चात् कुछ निश्चित निष्कर्ष सामने आए हैं। इन निष्कर्ष के आधार पर त्रुटियाँ होने का कारण तथा समाधान के सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

4.5.4.1. निष्कर्ष :

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी की वर्तनीगत कुल त्रुटियाँ 14 प्रतिशत प्राप्त हुई। इन त्रुटियों को तीन भाग में विभाजित कर सकते हैं :

1. स्वर–वर्णों से संबंधित त्रुटियाँ,
2. व्यंजन–वर्णों से संबंधित त्रुटियाँ और
3. अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्न) की वर्तनीगत त्रुटियाँ

1. **स्वर–वर्णों से संबंधित त्रुटियाँ :**

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी की स्वर–वर्णों से संबंधित वर्तनीगत कुल त्रुटियाँ 14 प्रतिशत प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में चार प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं :

1. दीर्घीकरण की प्रवृत्तियाँ :

   छात्रों ने ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ स्वर–वर्ण के प्रयोग की त्रुटियाँ की हैं। इस प्रवृत्ति के अंतर्गत 15 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

2. ह्रस्वीकरण की प्रवृत्तियाँ :

   छात्रों ने दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व स्वर–वर्ण के प्रयोग की भी त्रुटियाँ की हैं। इसकी कुल 18 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

3. संयुक्त स्वर संबंधी प्रवृत्तियाँ :

   गुजराती भाषी छात्रों ने संयुक्त व्यंजन के लेखन में 'ऐ' के स्थान पर 'ए' तथा 'औ' के स्थान पर 'ओ' का प्रयोग किया हैं। इस प्रकार की कुल 27 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

4. अन्य प्रकार की प्रवृत्तियाँ :

   गुजराती भाषी छात्रों ने वर्तनी में एक स्वर के स्थान पर भिन्न स्वर के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ की हैं, इस प्रकार की त्रुटियों को अन्य प्रकार की प्रवृत्तियाँ में रखा हैं। इस प्रकार की कुल 10 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

2. व्यंजन–वर्णों से संबंधित त्रुटियाँ :

गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी की व्यंजन–वर्णों से संबंधित वर्तनीगत कुल त्रुटियाँ 14 प्रतिशत प्राप्त हुई। इन त्रुटियों में आठ प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं :

1. अल्पप्राण–महाप्राण की प्रवृत्तियाँ :

   छात्रों ने अल्पप्राण व्यंजन वंर्णों के स्थान पर महाप्राण व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया हैं। इस प्रकार की कुल 16 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

2. महाप्राण–अल्पप्राण की प्रवृत्तियाँ :

   छात्रों ने महाप्राण व्यंजन वर्णों के स्थान पर अल्पप्राण व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया हैं। इस प्रकार की कुल 30 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

3. घोस–सघोस की प्रवृत्तियाँ :
छात्रों ने सधोष व्यंजन वर्णों के स्थान पर अघोष वर्णों का प्रयोग किया हैं। इसकी कुल 05 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।
4. मूर्धन्य–दंत्य की प्रवृत्तियाँ :
गुजराती भाषी छात्रों ने मूर्धन्य वर्णों के स्थान पर दंत्य वर्णों के प्रयोग की अनेक त्रुटियाँ की हैं। इसकी कुल 08 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।
5. ऊष्म वर्ण से संबंधित प्रवृत्तियाँ :
छात्रों ने ऊष्म वर्णों के प्रयोग में विभिन्न प्रकार की त्रुटियां की हैं। इस प्रकार की कुल 20 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।
6. अन्य प्रकार की प्रवृत्तियाँ :
गुजराती भाषी छात्रों ने कुछ व्यंजन वर्णों के स्थान पर अन्य व्यंजन वर्णों का प्रयोग किया हैं; इस प्रकार की त्रुटियों को अन्य प्रकार की प्रवृत्तियाँ में रखा हैं। इस प्रकार की कुल 04 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।
7. संयुक्त व्यंजन संबंधी प्रवृत्तियाँ :
गुजराती भाषी छात्रों ने हिंदी संयुक्त व्यंजन वर्णों की अनेक प्रकार की त्रुटियां की हैं। इसकी कुल 11 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।
8. नूक्ता युक्त व्यंजन संबंधी प्रवृत्तियाँ :
छात्रों नूक्ता युक्त व्यंजन वर्णों, बिना नूक्ता से लिखते हैं। इस प्रकार की कुल 10 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

3. अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्न) की वर्तनीगत त्रुटियाँ :
गुजराती भाषी छात्रों की परीक्षण में हिंदी के अनुनासिक तथा अनुस्वार (चिह्न) की केवल अप्रयोग की त्रुटियाँ प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार की कुल 13 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई। इन त्रुटियों में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई हैं :

1. अनुनासिक–निरनुनासिक की प्रवृत्तियाँ :
इस प्रकार की त्रुटियों में अनुनासिक के स्थान पर निरनुनासिक प्रयोग की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। इसकी कुल 16 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।
2. अनुस्वार ' ˙ 'का अप्रयोग की प्रवृत्तियाँ :
इस प्रकार की त्रुटियों में अनुस्वार चिह्न का अप्रयोग हुआ हैं। इसकी कुल 10 प्रतिशत त्रुटियाँ हुई।

सारिणी–14 : 4.5.4. समग्र वर्तनीगत त्रुटियाँ :

क्रमांक	त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार एवं उदाहरण	त्रुटियों की संख्या (प्रतिशत में)
1	दीर्घीकरण	अ > आ – अच्छा > आच्छा	02
		इ > ई – दिन>दीन	27
		उ > ऊ – बहुत > बहूत	17
2	ह्रस्वीकरण	आ > अ – हमारा > हमरा	05
		ई > इ – तीन > तिन	27
		ऊ > उ – दूर>दुर	21
3	संयुक्त स्वर	ऐ > ए – पैदल>पेदल	30
		औ>ओ – औरत>ओरत	24
4	अन्य	अ>ए – सुबह>सुबेह,	09
		अ>ओ – दोपहर>दोपोहर,	05
		इ>ए – इकट्ठा>एकट्ठा,	04
		उ>ओ – बहुत>बहोत,	30
		ऊ>ओ – जाऊँगा>जाओगा,	02
		ए>इ~ई–बेचने>बिचने,मेला>मीला,	13
		ऐ>इ – ऐसा>इसा,	11
		आ>ओ – पाँच>पोच,	10
		औ>ऊ – मौका>मुका	05
5	अल्पप्राण–महाप्राण	ख>क – मुखड़ा > मुकरा	17
		घ>ग – घर > गर	01
		झ>ज – समझ > समज	38
		ध>द – धरा > दरा	05
		फ>प – कफन > कपन	46
		भ>ब – आभार > आबार	03
		छ>च – कुछ > कुच	03
	महाप्राण–अल्पप्राण	त>थ – भूतल > भूथल	30
6	घोस–सघोस	ग>क – लोग > लोक	05
7	मूर्धन्य–दंत्य	ट>त – टमाटर > तमातर,	05
		ड>द – डकेत > दकेत,	05
		ण>न – गुण > गुन।	15

8	ऊष्म वर्ण	श>स – देश > देस,	15
		श>ष – आकाश > आकाष,	27
		ष>स – विषय > विसय,	03
		ष>श – विष > विश,	27
		स>श – सामान > शामान,	27
	अन्य	छ>स – कुछ > कुस,	03
		छ>च – कुछ > कुच	04
		च>स – सच > सस	05
10	संयुक्त व्यंजन	कृपिया>कृप्या, स्टेशन>इस्टेशन।	11
11	नूक्ता युक्त व्यंजन	़>×–राज़>राज।	10
12	अनुनासिक–निरनुनासिक	ँ > × – पहुँच > पहुच,	16
13	अनुस्वार ' ं 'का अप्रयोग	ं>×– में>मे, मैं>मै, नहीं>नही,	10
योग			14

4.5.4.2. कारण :

वर्तनीगत त्रुटियाँ विभिन्न कारणों की वजह से होती हैं। गुजराती भाषी छात्रों की वर्तनीगत त्रुटियाँ का विवेचन, विश्लेषण के पश्चात् उन त्रुटियों के कारणों का निर्धारण करने का प्रयास किया जा रहा हैं, जिनकी वजह से गुजराती भाषी छात्र हिंदी वर्तनी में त्रुटियाँ करते है। मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :

1. शुद्ध उच्चारण के ज्ञान का अभाव,
2. देवनागरी लिपि और उनके प्रयोग–विषयक समुचित जानकारी का अभाव,
3. परंपरागत वर्तनी के ज्ञान का अभाव,
4. संधि एवं शब्द रचना के नियमों की जानकारी न होना,
5. लिपि की अस्पष्टता,
6. मातृभाषा का प्रभाव,
7. दोषपूर्ण शिक्षण,
8. शिक्षक–छात्र के बीच अच्छे संबंध का न होना,
9. कमजोर स्मरण शक्ति।

4.5.4.3. समाधान के सुझाव :

गुजराती भाषी छात्रों की वर्तनीगत त्रुटियों की समस्याँ को दूर करने हेतू समसधान के व्यवहारिक सुझाव देने उचित होगा। अतः कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

1. शुद्ध उच्चारण का ज्ञान कराना,
2. देवनागरी लिपि और उनके प्रयोग–विषयक समुचित जानकारी देना,
3. परंपरागत वर्तनी का ज्ञान कराना,
4. संधि एवं शब्द रचना के नियमों की जानकारी देना,
5. लिपि की अस्पष्टता दूर करना,
6. मातृभाषा और लक्ष्य भाषा(हिंदी) को तुलनात्म रुप से पढ़ाना,
7. शिक्षण में सुधार,
8. शिक्षक–छात्र के बीच सौहार्द पूर्ण संबंध स्थापित करना,
9. छात्र को–
   - निसंकोच अध्ययन में आने वाली हर समस्या अपने शिक्षक से कों बतानी चाहिए।
   - परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा लिखने का आग्रह रखना चाहिए ।
10. शिक्षक को–
    - परिशुद्ध और स्पष्ट भाषा बोलने के साथ–साथ लिखने का आग्रह रखना चाहिए।
    - अपेक्षित शिक्षण–सहायक सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
    - कठिन या क्लीस्ट वर्तनी को श्यामफलक पर अवश्य लिखना चाहिए तथा छात्रों से लिखवाना चाहिए।
    - वर्तनी के नियम सीखाना चाहिए तथा वर्तनी और अर्थ भेद बताना चाहिए।
    - शिक्षक को चाहिए कि वह रोचकता के साथा पढ़ाए तथा साथ–साथ वह छात्रों के साथ वत्सलतापूर्ण व्यवहार करे ताकि छात्र अपनी हर समस्यां निःसंकोच रूप से खुलकर बता सके।